वेलेंटाईन डे :

नवयौवन का प्रेम बसंत

प्यार, व्यापार और कोविड के बीच वैलेंटाइन डे

डॉ० घनश्याम बादल

युवामन ,वसंत का मौसम और ऐसे में आता है 14 फरवरी यानि वेलेंटाईन डे । ऐसे में कामदेव का जादू युवा मन को डांवाडोल करेगा ही । बस, इसी सूत्र को पकड़ कर व्यापार जगत भी अपने पत्ते चल देता है । प्यार अब दो 'दिल के तार' के साथ व्यापार को भी झंकृत कर उसे भी परवान चढ़ा रहा है । जवां दिलों को आनंद मिल रहा होगा पर साल भर से कोविड-19 काल में मंदी की मार झेल रहे व्यापार को क्वारंटाइन दर्द से वैलेंटाइन डे थोड़ी सी संजीवनी तो दे ही जाएगा । दिल की लगाई और थोड़ी सी कमाई यही है आज वेलेंटाईन डे का असली मतलब ।

कैसे छाया वेलेंटाईन डे :

जब संस्कारो की पैरोकार भारतीय संस्कृति की वर्जनाएं जब जवां दिलो के मिलन में अड़ी खड़ी थी , तब पश्चिम की उन्मुक्त संस्कृति प्रेम का पैगाम लेकर आई और छा गई 14 फरवरी यानि वेलेंटाईन डे के रूप में । आज इसके प्रति क्रेज कितना बढ़ गया है यह बताने की जरुरत नहीं है । 'लव बर्ड्स' यानि प्रेमी जोड़े अपना वेलेंटाईन ढूंढने सब वर्जनाओं व प्रतिबंधों का धता बताते , हर खतरा उठाते हुए निकल पड़ते हैं वेलेंटाईन डे पर अपना प्रेम पाने के लिए । आइए,जानने की कोशिश करते हैं वेलेंटाईन डे का मतलब व उद्देश्य।

कहां से आया वेलेंटाईन डे:

वेलेंटाईन डे के पीछे की लंबी कहानी का लब्बो लुबाब यह है कि जब राजा व शासन तक प्रेम के खिलाफ थे तब एक चर्च के पादरी ने प्रेमी जनों के लिए चोरी छुपे काम करना शुरु किया चूंकि पादरी का छद्म नाम ही वेलेंटाईन था सो प्रेमियों ने एक दूसरे को अपना 'वेलेंटाईन' कहना शुरु कर दिया मगर, कहते हैं कि प्यार छुपाए नहीं छिपता तो राज़ खुलना ही था और तब माहौल में प्यार की सजा भी साफ थी संत वेलेंटाईन को जीवन से हाथ धोना पड़ा। भले ही संत वेलेंटाईन नहीं रहे पर अपने पीछे वेलेंटाईन डे छोड़ गए जो आज भी अपना जलवा बिखेर रहा है। यह प्रेम की ही ताकत है कि लोग जालिम सम्राट को तो भूल गए पर वेलेंटाईन डे के रूप में संत वेलेंटाईन आज भी जिंदा हैं।

दर्शन से प्रदर्शन तक प्रेम :

प्रेम को प्रदर्शन की नहीं अपितु दर्शन व अनुभूति की भावना मानने वाले भारत में प्रेम की परम्परा नई नहीं है। हां, प्रेम हमारे लिए देह से अधिक दर्शन से जुड़ा रहा है। लैला मंजनू, हीर रांझा, शीरी - फरहाद, सोहनी - महिवाल के साथ दुष्यंत - शकुंतला, संयोगिता - पृथ्वीराज, कृष्ण व रुक्मणि के प्रेम प्रसंग बड़े चाव से सुने जाते रहे हैं भारत में भी।

प्रेम करते हैं देव भी :

इतना ही नहीं हमने तो अपने देवी देवताओं में भी रति - कामदेव, शिव - पार्वती राधा - कृष्ण, सीता - राम के जोड़े बना रखे हैं आदर्श प्रेम के प्रतीक रूप में। भारत की संस्कृति में प्रेम में भक्ति व समपर्ण भरे प्रेम को अधिक सम्मान मिला है। जबकि पश्चिम के प्यार में देह व भोग का भाव अधिक है। जहां हमारे लिए प्रेम महसूस करने व गूंगे के गुड़ की तरह आस्वादन का जोर है वही पश्चिम ने प्रेम को स्वर दिया है। लेन - देन का मंच दिया है। प्रेम पत्र दिए हैं।

पहला प्रेम पाती :

माना जाता है कि 1400 ई0 में लकडी के महीन टुकड़ों पर बने हुए वेंलेंन्टाईन कार्ड अस्तित्व में आए । ऐसा पहला कार्ड 1415 में होने का प्रमाण मिलता है । कहा जाता है कि पहला प्रेम पत्र मिट्टी की फर्द पर लिखा गया था जो मानव की प्रेम की अभिव्यक्ति का पहला लिखित प्रमाण माना जाता है । हालांकि भारतीय साहित्य में 'भ्रमरगीत' से प्रेम को मुखरित किया गया है । यहां प्रेम के संदेश सूरदास से पहले कालिदास 'मेघदूतं' में भेजते दिखते हैं और उससे भी पहले रुक्मणि, कृष्ण को बुलावा भेजती है अपने अपहरण का ।

प्रेम से ई प्रेम तक :

कबूतर यहां प्रेम संदेश वाहक रहा है पर स्पीड़ के जमाने में स्लो प्रेम को कौन तवज्जो देता है। सो अब प्रेम ने भी गति पकड़ व्हाट्सए ,फेसबुक , ईमेल , ई कार्ड्स , पाॅपअप कार्ड्स, म्यूजिक कार्ड्स आदि के साथ एस एम एस ,एम एम एस , ई मैसेज से प्रेम को अभिव्यक्ति दी है ।

प्यार के बीच दीवार :

अब किसका प्रेम कितना सच्चा या झूठा है इस पर बात करने का मतलब है रार खड़ी करना । आज भी प्रेम के विराधी मौजूद हैं तो जाति, धर्म, मज़हब की दीवारें आज भी हैं । अरेंज्ड मैरिज ही आज भी सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है पर फिर भी प्रेम जिंदा है जो वेलेंटाईन डे के बहाने आज भी सर उठाने की जुर्रत करता है ।

प्यार भी व्यापार भी :

वेलेंटाईन डे का दूसरा सच है व्यापार जगत की दूर की सोच । यह क्षेत्र अपने उत्पादों की बिक्री बढ़ाने के लिए वेलेंटाईन डे को पूरी तरह से भुनाने में जुटा रहा है । महंगे गिफ्ट का चलन इसी नीति के चलते आज स्टेटस सिंबल बन गया है । ग्रीटिंग काड्स का ज़माना गया तो अब उपहार का युग आ गया है । अनुमान है हर साल वेलेंटाईन डे पर दुनिया भर में करीब 1000 मिलियन डाॅलर से भी ज्यादा का व्यापार होता है । गहने , कपड़े , मोबाइल ,

लेपटाॅप , के साथ हीरे व प्लेटिनम के उत्पाद अमीर लोगों के प्रेम इज़हार का जरिया बन चुका है ।

हाट बिकता प्रेम :

आज क्लबों व होटलो में पार्टियों के बहाने प्रेममिलन पर जोर है , हर वेलेंटाइन डे पर केवल भारत में ही होटल इंडस्ट्री एक अरब रुपए से भी ज्यादा की कमाई कर रही है । आज के दिन होटलापें में कमरा मिलने का कोई रेट नहीं रह गया है । पर "जेब में दम है तो क्या ग़म है" हर चीज उपलब्ध है । गिफ्ट उद्योग व फिल्म उद्योग भी इस मौके को अच्छा खासा भुनाते रहे हैं । यानि अब 'प्रेम न हाट बिकाय' की बात सच्ची नहीं रह गई है । प्रेम भी जाने अनजाने में व्यापार का हिस्सा हो गया है ।

सावधान कोविड गया नहीं ! :

अब प्रेम को व्यापार मानें या न मानें पर इस साल वैलेंटाइन डे पर कोविड-19 की छाया जरूर है । इस वैलेंटाइन डे पर प्रेमियों को खास सावधानी बरतने की जरूरत भी है। भले ही वैक्सीन आ गया है पर खतरा टला नहीं है । संक्रमण हवा में मौजूद है इसलिए प्रेम कीजिए पर जरा दूर से । बिना मास्क का प्रेम खतरनाक 'टास्क' हो सकता है । चॉकलेट या गुलाब दीजिए नहीं भेजिए । 'हग' यानी आलिंगन करना है तो आभासी करिए । शारीरिक रूप से 'किस डे'मनाएंगे तो जान जाने का खतरा भी उठाएंगे । वैसे भी प्रेम शरीर का नहीं मन का तत्व है । सच्चे मन से अपने प्रेमी प्रेमिका को प्रीत करिए सराहिए, उसके प्रति समर्पण रखिए,उसका ख्याल रखिए तभी प्रेम सफल एवं फलदाई रहेगा। जब संक्रमण से बचकर स्वस्थ रहते हुए प्रेम करेंगे तभी तो प्रेम परवान चढ़ेगा, तो वैलेंटाइन डे मनाइए, मगर अपनी सीमाओं का ख्याल रखते हुए।